नाम- डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसो. प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।

विषय- राजनीतिशास्त्र
वर्ग- बी.ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट- 02, सत्र 2019-20

पेपर- 04
दिनांक- 02.06.2020

टॉपिक- संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य और सिद्धांत-

द्वितीय विश्व युद्ध के काल में विश्व को शांति, स्थिरता, विकास एवं न्याय प्रदान करने की दृष्टि से तथा धुरी राष्ट्रों के खतरे से विश्व को बचाने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र संघ अस्तित्व में आया। आधिकारिक रूप से इसकी स्थापना 24 अक्टू. 1945 ई. में हुई। आज यह एक सार्वभौमिक अंतर्राष्ट्रीय संगठन एवं विश्व सरकार के रूप में क्रियाशील है।

इसके 06 अंग, 17 विशेष अभिकरण एवं 14 मुख्य कार्यक्रम एवं निधियाँ हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य— चार्टर के अनुसार संयुक्त राष्ट्र संघ के चार प्रमुख उद्देश्य हैं—

(1.) सामूहिक व्यवस्था द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा कायम रखना और आक्रमक प्रवृत्तियों को नियंत्रण में रखना;

(2.) अंतर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान करना;

(3.) राष्ट्रों के आत्मनिर्णय और उपनिवेशवाद विघटन की प्रक्रिया को गति देना;

(4.) सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित एवं पुष्ट करना।

संघ ने इन उद्देश्यों से जुड़े दो और लक्ष्य भी निर्धारित किये हैं — निरस्त्रीकरण और नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना।

संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धांत (Principles)— सं. रा. संघ के चार्टर की धारा-2 में इसके निम्नलिखित मौलिक सिद्धांत बताये गये हैं—

(1) इसका प्रधान आधार छोटे-बड़े सब देशों की समानता और सर्वोच्च सत्ता का सिद्धांत है।

(2.) सब सदस्यों से यह आशा रखी जाती है कि वे चार्टर

Scanned with CamScanner

द्वारा उनपर लागू होने वाले दायित्वों का पालन पूरी ईमानदारी से करेंगे।

(3.) सभी सदस्य अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों का निपटारा शांतिपूर्ण साधनों से करेंगे।

(4.) सभी राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों के प्रतिकूल कोई कार्य नहीं करेंगे।

(5.) कोई भी देश चार्टर के प्रतिकूल काम करने वाले देश की सहायता नहीं करेगा।

(6.) सं. रा. संघ इसका सदस्य न बनने वाले राज्यों से भी अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाये रखने वाले सिद्धांत का पालन कराएगा।

(7.) सं. रा. संघ किसी देश के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

उपर्युक्त उद्देश्यों एवं सिद्धांतों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि विश्व में शांति, स्वतंत्रता, राष्ट्रीय सम्मान, संप्रभुता विकास, प्रजातंत्र के आदर्शों के अनुरूप अंतर्राष्ट्रीय समाज के निर्माण आदि की दृष्टि से सं. रा. संघ अपने स्थापना काल से लेकर आज तक इस ओर बढ़ने का निरंतर प्रयास कर रहा है। भले ही इस संबंध में उसे कतिपय असफलतायें भी मिली हैं किंतु उपर्युक्त लक्ष्य की दृष्टि से इसका निरंतर ऊपर और समर्थित होना विश्व परिवार के लिये अनिवार्य है।